अजना अनिल
की
लघुकथाओ
की
पहली किताब

—लघुकथा को
समर्पित पीढ़ी
के नाम—

क्रम

लघु कथा की बात

विधा अथवा मान्यता कोई भी हो, उसके लिए बुनियादी तौर पर जरूरी है कि स्वस्थ परम्पराओ का निर्वाह तथा अपने ऐतिहासिक गौरव को कायम रखते हुए, अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि के तहत सामाजिक यथार्थ को अस्तित्व प्रदान कर। एक सफल रचनाकार स्थितियो का विरोध न करके, उससे सफल साक्षात्कार करता है। आज प्रत्येक दृष्टि-कोण से सूक्ष्म अन्तर्विरोधो का हम सामना कर रहे हैं। य परिवेश साधन सम्पन्नता के बावजूद भी दुस्थितियो वश बौना है। समाज का प्रतिरूप साहित्य के चाल चलन का ही दूसरा नाम है। एसे मे साहित्य की समान-धर्मा, लघुकथा, हमारे अन्तस मे तरगायित कभी विडबनाओ विसगतियो तो कभी टकराव को लेकर सीधे-सीधे, आज समय की आवाज बन गयी है।

परन्तु उक्त सदभ स तनिक पीछे हटें तो पायेगे कि लघुकथा सप्रेषण का मूल्याकन (गैर)—नजरिये की ओर भी आपसे आप मुड रहा होता है जहा लघुकथा का एक विवाद, ममला और आन्दोलन का रूप देने के लिए कतिपय तथाकथित लघुकथा समीक्षक अपना-अपना औपन्यासिक औचित्य देने पर तुले हुये दीख पडते हैं। कहना होगा कि सक्रमण काल के दौर मे गुजरी प्राय कई साहित्यिक प्रस्तुतिया की भाति लघुकथा भी जीवन्त सत्यो का उदघाटित करने के लिए कृतसकल्प रही है—तो कोई अति-श्योक्ति न होगी।

लकिन बावजूद, इसके लघुकथा का बिना किसी आन्दोलन मे शामिल करते हुए आज की यथार्थपरक माग इस सच्चाई को नही झुठला सकती

कि अपनी निरन्तरता के लिए य साहसपूर्ण विधा, कठोर धरातल बीच स उगी—एक सशक्त अभिव्यक्ति है। पर दुख इस बात का है कि इसे विवादो के घर म खडा करन वाला ने अपनी अपनी तथाकथित 'साहित्यिक प्रतिभा के बल पर इस विधा पर छीटाकशी की। मोटे तौर पर विरोधी मुद्दे उठे कि—लघुकथा का जिक्र ही क्यो ? ये कुछ भी नहीं मात्र हसी का क्षणिक प्रतिरूप !

दूसरी ओर अपनी धीमी यात्रा के सुखद पडावो का पार कर पाठ कीय सोच का झकझोरती हुयी साहित्यिक कसौटी पर एक सफल चुनौती बनकर खडी हुई लघुकथा—हर स्थिति की स्पष्ट रूप स निर्णायक बनी।

कहना होगा कि औचित्य अनौचित्य के समीक्षात्मक आवटन बीच लघुकथा अपनी यात्रा म भटकी भी।

इतना भी जरूर मानना होगा कि भीतरी लडाई का लकर प्रतिभावान लघु कथाकार तक भी अपन गन्तव्य तथा मन्तव्य के साथ अपनी भूमिका सही तौर निभा न सके। जाहिर था इस विधा का तमाशा बनान वाला का खेमा एकजुट होकर ताली पीटता परन्तु,लघुकथा की विकास-यात्रा मे मजबूती से रखा गया हर पाव अपनी छाप छाडता गया (यहा लघुकथा की समीक्षा यात्रा का विवरण अत्यधिक विस्तार की माग करता है परन्तु अपन कथन का सतुलित करते हुए कहना मुनासिब है कि लघु कथा का सही दृष्टि मानन वाले रचनाकार सामने आये। निरथक आरोपो को बडी बारीकी स नजरअन्दाज करत हुए, इस हर षडयन्त्र स मुक्त करन का बीडा उठाया।

लगभग पिछले दो दशको स लघुकथा न अपनी पुष्टता बीच स गुजर कर सशक्त एव सुदृढ सप्रेषण के माध्यम से अपनी जो पहचान बनायी है—उसे नकारा नहीं जा सकता। परिणामत आज की लघुकथा साहित्य की एक स्वतन्त्र विधा है।

जहा तक मेरा विचार है मैं मानती हू कि जीवन के तीखे अनुभवो तराशे हुए क्षणो और मूल सत्या को अपनी यथार्थपरक प्रक्रिया तथा सशक्त प्रतिक्रिया के माध्यम से जो आवाज कम से कम शब्दो द्वारा, अपनी पहचान को पुख्ता स्वर देन हतु कृतसकल्प है—साहित्यिक परिभाषा के तहत, उसे मैं लघुकथा मानती हू।

भले ही आकार मे ये लघु हैं शब्द सीमा का तो फिर भी कोई विशेष

निर्धारण नही। प्रत्येक विधा का अपना महत्व है। छोटे से केनवास पर बडी से बडी बात प्रभावित स्तर पर कह देना और 'इसी' के बल पर इसानी अधिकारो को 'हक प्रदान करवाना—इस विधा की एक बुलन्दी है। आज के जनजीवन से सन्दर्भो और हालाता से वतमान लघुकथा सीध-सीधे जुडी है। य क्या कम महत्वपूण है ? मैं मानती हू कि इस सफलता का देखत हुए लघुकथा का महत्व और सही कतय निश्चित रूप से सुरक्षित है।

हा ये सच्चाई है कि व्यवसायिक पत्र/पत्रिकाए भी कुछ वर्षो पूव तक लघुकथा के प्रति उदासीन रही क्योकि चुटकलबाज साहित्यकारो ने इस लफ्फाजी ही माना।

जाहिर था व्यावसायिक लेखको की प्रतिक्रिया को मान्यता मिलती परिणामत बडी पत्रिकाए इस तरफ नही झुकी। परन्तु धीरे धीरे सत्य अपन धरातल को मजबूत बनाता चला गया। धार काटने वाली—चितन धारा के लखका द्वारा लिखी गयी लघुकथाओ ने अपना अमिट प्रभाव डाला। कौन झुठला सकता है कि प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओ ने लघुकथा का अब योगदान नही दिया ? यकीनन लघुकथाक तक निकाल गय।

कमल चोपडा, रमेश बत्तरा, जगदीश कश्यप, विक्रम सोनी, बलराम, कृष्ण कमलेश आदि लघुकथाकारो ने तो लघुकथा को सही दिशा देकर पुख्ता जमीन तयार की है।

मन को किन्ही यथार्थपरक स्थितिया—परिस्थितिया बीच से कुरदकर मैंने भी अपनी रचना प्रक्रिया को इन लघुकथाओ मे बुन डालने का अदना सा एक प्रयास किया है।

माहौल इतना ज्यादा घना बिखरा हुआ और उदास है कि शब्द और अथ गड्डमड्ड हो जात रह। लेकिन चूकि बदलाव को मैं ताजगी की सज्ञा देती हू इसीलिए जब जब अपनी सजन यात्रा म कुछ अथपूण तलाशने का यत्न किया—उस अल्प शब्दो मे बाधा। और ये तमाम बधाव अनिल जी के प्रोत्साहन का ही प्रतिफल है।

कम से कम कहना और अपने कह हुए के लिए ज्यादा सुनन की इच्छा ही मेरा आतरिक सघष है। इसी सघष के बीच लिखी गयी (कुछ न कुछ तलाशती) य लघुकथाए सदैव मेर स्मृतिया के इतिहास का जीवत

रखेंगी। यदि पाठकों का इनमें सामयिकता, सार्थकता, किन्ही अंशों तक सत्य और यथार्थ झलकता हुआ मिला हो।

मैं श्रीकृष्ण 'मायूस' जी के प्रति आभारी हूं जिन्होंने इस संग्रह को, अपने प्रकाशन से, प्रथम लघुकथा संग्रह के रूप में प्रकाशित करके, मेरी तलाशभरी यात्रा का पहला पड़ाव दिया।

—अंजना अनिल

स्मृति सदन,
२८, रघु मार्ग
अलवर ३०१००१ (राज०)

तलाश

अपनी इस आन्तरिक जिज्ञासा को शान्त करने हेतु मैं समुद्र तट पर खड़ी हू कि आज सागर की लहरो को गिनकर ही दम लूगी।

हिलोरें असीम का पर्याय। श्वेतवर्णी उफान को देख रही हू जो मेरी झिलमिलाती पुतलियो के बीच अटक रहा है। दो आसू ढुलक कर बह जाते है मैं पोछना नही चाहती। विधना! तेरे अपार से आज साक्षात्कार हो गया। लगता है तुझ अनन्त का देख पाने की––भावविह्वलता ही सवस्व है। अनन्त की थाह कौन ले सका है? कौन गिन सका सागर-लहरियो को? क्या प्रकाशमय ज्वार मैं समेट पाऊगी?

सोचती हू ये सब एक तलाश ही बना रहना चाहिये।

प्रश्नो के वीच

दहेज ्हज दहेग । एक दानव का सा प्रतिरूप बनकर अब च दन के मन मे बैठ गया है !

हर बात मे विराधाभास !

हर बात म नाटकीयता !

कितनी कसममाहट है उमम इस विषमता के प्रति जहाद छेड देन के लिए ! विकास मधुर सजीव विनम्र कितना शक्तिशाली माधा बनाया था सबने मिलकर। कसा आघात मिला था च दन का य जानकर जब इन सबन अपन अपने ससुराल से मिले दहेज के सामन घुटन टेक दिये थे।

अब चन्दन अकेला है और इतने सार प्रश्न !

दुनियादारी

मास्टर गगा प्रसाद जी आज बेहद खुश ह।

धनिक सठ मनाहरलाल जी क इकलौत बटे की टयूशन का आज पहला दिन है।

तनख्वाह पूरे दा सौ रुपय।

सिफारिश का ही तकाजा था वरन् सरकारी स्कूल मास्टर ।

'रतन कुटीर म पहुच गय है।

मालकिन न देख लिया है। फौरन बैडरूम म भागी है उठा जी पप्पू जी मेर राजा बेटे जी ! टयूशन नही पढेंग क्या आप ?

देखिय मास्टर आ गया है।

गगाप्रसाद जी सुनकर चौके और अगल ही क्षण उल्टे परा वापिस लौट गये।

—

चपत-चपाती

कक्षा पाच।

हिन्दी का पीरियड।

'चपाती पर कुछ पंक्तियां कहो।' मास्टर साहब बोले।

कई हाथ एक साथ उठ खड़े हुए मगर उमेश निर्जीव सा बैठा रहा।

'नालायक! एक तू ही है जिसे कुछ नहीं आता खड़ा हो और बता।'

उमेश बेबस सा उठा और नीची निगाह किये बोल उठा मास्साब! मा बीमार है बरतन माजने नहीं जा सकी-- पैसे नहीं आये आटा नहीं था। चपाती नहीं बनी। उमेश रुआंसा हो उठा।

लड़के हंसने लगे।

'चुप बहुत हो चुका बैठ जा।' मास्टर साहब ने तड़ से उसे एक चपत पिला दी।

बावजूद इसके

एक दगायी ने दूसरे दगायी से कहा, 'यार ! अब कुछ फ़ैश हुआ जाये। झापड़-पट्टिया से मन उचट गया है।'

एक ने कहा,— यार ! तुम तो विचारक भी हो, देश मे कुछ नया घटित हो रहा हो तो बताओ ?'

दूसरा दगायी बोला,— हमारी लगायी आग का ही परिणाम है कि प्यारे चारो ओर जिस्म खाये जा रहे है खून पिया जा रहा है। लेकिन इस सबके बावजूद एक अच्छी बात कि हमी लोग भाषण भी उगलते जा रहे है।'

दोनो स्वय भी चकित थे।

चपत-चपाती

कक्षा पांच।

हिन्दी का पीरियड।

'चपाती पर कुछ पंक्तियां कहो।' मास्टर साहब बोले।

कई हाथ एक साथ उठ खड़े हुए मगर उमेश निर्जीव सा बैठा रहा।

'नालायक! एक तू ही है जिसे कुछ नहीं आता। खड़ा हो और बता।'

उमेश बेबस सा उठा और नीची निगाहें किये बोल उठा 'मास्साब! मां बीमार है। बर्तन मांजने नहीं जा सकी—पैसे नहीं आये। आटा नहीं था। चपाती नहीं बनी।' उमेश रुआंसा हो उठा।

लड़के हंसने लगे।

'चुप! बहुत हो चुका। बैठ जा।' मास्टर साहब ने तड़ से उसे एक चपत पिला दी।

बावजूद इसके

एक दगायी ने दूसरे दगायी से कहा, 'यार ! अब कुछ फ़ेश हुआ जाये। झोपड-पट्टियो से मन उचट गया है।'

एक ने कहा,—'यार ! तुम तो विचारक भी हो, देश मे कुछ नया घटित हो रहा हो तो बताओ ?'

दूसरा दगायी बोला,— हमारी लगायी आग का ही परिणाम है कि प्यारे चारा ओर जिस्म खाये जा रहे हैं खून पिया जा रहा है। लेकिन इस सबके बावजूद एक अच्छी बात कि हमी लोग भाषण भी उगलते जा रहे हैं।'

दोना स्वय भी चकित थे।

हीग लगी न फिटकरी

'सुनती हा री ए तारा ऽऽ ! अरी कहा बैठी साग बीनार री है ?'

'हा ऽऽ , आऽऽ री, सुमित्रा भन।

मुहल्ल मे के हा रिया है खबर है तुझे भी ?'

नाऽऽना ऽऽ क्या हुआ रे ऽ ?

'तूने सुना नी क ? कौसल्या की चौथी लाडा कल ब्याही गई।'

हाय-राम ! दा महीन पहल तो मजु ब्याह दी थी।'

गजब है तारा उनकी माया, अपनी समझ स परे है। हे भगवान! दफ्तर मे और लोगन की छोरी भी नौकरी करन जावै है पर गिरधारी और कौसल्या न ता सारी सग्म बच दी है। छारिया की खातिर नू कहू, कौसल्या ता छोरिया को आग लगावन मे बढावा देती दीक्ख। न जान कहा कहा क लफगे लौंडे पल्ले बघे फिरे है। छोरिया अट-सट धधे करै है, नही तो साल भर मे चार चार ब्याह आज कौन कर सके है ?

सुमित्रा की आवाज सुन लीला, लाजो धरमी, शकुतला सब आ गयी।

'क्या कहा ? रीता भी लग गयी किनारे ? लीला बाली—

'हू ऽऽ भाड मे गयी ससुरी आप सो आप ब्याह न छोरे क कुल का पता-- ना बाप दादा का जाण कौण जात है भरी बिरादरी म नाक जो कट गयी गिरधारी की कौण इज्जतदार घराना ऐसी छारियो का बहू बणावै। राम राम चुल्ल भर पानी मे ।

अरे मुहल्ले भर की छोरियो के लिए तैस है भन तैस ।' सुमित्रा फिर बाली। लाजो ने आख तरेरी।

'ना ऽ र ! मरी मुन्नी क दक्खा' सुमित्रा बाली, नौकरी करन जावै है एकदम दूधिया माडी म लिपटी लिपटायी। साम आत-जात मजाल है इधैं उधैं दस तो ले उसका बाप तो बच्ची कू चबा जावै बखत बौत खराब है बेट्टी राखणा बौत मुसक्लि है।'

'— हा री य ता तने सई कई री चलू ऽ मेरी मुन्नी आ गयी हागी। हम भी के दीवा-बात्ती के टैम इन नरकीले कीडो की बात ल बठे।'

माँ का तमतमाया चेहरा देख दालान म बैठी मुन्नी बाली, क्या हुआ अम्मा ? बडी गुस्से मे हा।'

दा जोरदार घूसे मुन्नी की पीठ पर जमाकर वह भडक उठी हुआ तेरा सिर। सात बरस नौकरी करत बीतण लाग हरामजादी, तुझे काई ब्याहवण लैंवा छारा न मिला जा दिन रात बाप का मगज खावै उन्नै एक घडी कू चैन नही। क्यू री ? किसी निपुति न तरी खात्तर छाग नी जणा के ? देख कौसल्या की चारा ब्याही गयी। जिसन की मरम उक्के फुट्टे करम। सुण ले मुन्नी, खबरदार जो कल स सफेद धाती पैरी तू भी बणवा ले बेलबट्टम लबी सी चाट्टी करके जरा यू ही घुम्मा फिरा कर। यू तो मिलेगा इ तुझे ब्याहण खातर जा राज्जी हागा। वारी कौसल्या थारा भाग ! तुझे ता हीग लगी ना फिटकरी तें रग भी चोक्खाऽऽ।

—

वह

पेड के नीचे घुटनो मे सिर दबोचे वह काफी देर स बठा था।

एक दयावान स्वभाव का गुजरता हुआ राहगीर बोला—अर इसी ठड मे नगे बदन बैठे हो ?'

वह चुप था।

इतने मे दो साइकिल सवार गुजरे। एक की निगाहें उसके बहते आसुओ पर पडी। बोला—

ये तो रो रहा है रे।'

'अरे रोता है !' दोनो वही ठिठक गये।

तभी तीन पनिहारिनें गागरें सिर पर उठाये उधर से गुजरी।

'किस माई का लाल है जो जारो जार रोता चला आ रहा है ?'

'हे भगवान !' दूसरी बोली।

बीमार लगता है। तीसरी बोली।

देखते ही देखते भीड सी इकट्ठी हो गयी। उसका रोना रुका नहीं बढता ही गया।

जमघट इकट्ठा हो गया और वह रोते रोते बेहोश हो गया। उसकी गर्दन एक ओर लुढक गयी थी।

उसके रोने का कारण क्या था ? कोई जानना नही चाहता था।

•

करट टापिक

वे तीना रिलक्सड मूड मे थ।

एक बाला। 'हमारे यहा हर नई फिल्म की जो जान स चर्चा हाती है। हर वक्त बस फिल्म की ही बात ।'

दूसरा बीच म बाला—'हम लोग ता राजनीति पर ही बहस करते है रोज की खबरो पर चर्चा भी।

तीसरे को खामोश दखकर पहले ने कहा—

'अबे तेरे यहा कोई बात नही होती क्या ?'

'हाती है।' सासो का लबा कश खीचते हुए तीसरे ने कहा—महगायी की चर्चा कि घर म कौन सी चीज खत्म हा गयी है और आटा कितनी रोटिया के लिए बचा है।'

वे दोना मुह म कडवापन महसूसते हुए खिसक गय।

— —

बदला

एक विचारक था। आदर्श की कसौटी पर जीवन के हर अनुभव को परखने वाला परन्तु अपनी सोसाइटी—मे वा उपेक्षित माना जाता। दोस्तों का ये रवैया सहते सहते वह ऊब चुका था।

आज वह अपनी प्रतिभा के सिर्फ एक प्रतिशत बल पर ही राजनीतिज्ञ बन गया है। जो लोग उसे पागल कहते थे आज वही पागल कहलवाते है। कारण ? भाषण बाजी और ओढा हुआ पन उसके जीवन का अंश बन गये हैं। उसने अपना बदला लेने मे—कोई कोर कसर नही छोड रखी। वही मित्र और सोसाइटी वाले उससे कतराते है परन्तु फिर भी वह प्रश्नचिन्हों के बीच से बराबर गुजर रहा है।

हादसा

जीवन की तकलीफों और संघर्षों से तंग आकर उसने आत्म हत्या करने की सोची।

नदी तट पर पहुंच कर छलांग लगाने को ही था कि एक मछली किनारे पर आ गयी।

'ए भाई! मरेगा?'

'हां!'

'क्यों?'

'जिन्दगी में दुख ही दुख है चैन नहीं, यही सब सोचकर तो मैंने।'

'बीवी को साथ हो? मछली हंसी।'

'?'

'तुमने तो साथ साथ मरने जीने की कसमें खायी थी।'

'वो देखो तुम्हारी बीवी—।'

'लौट : ! मैं ही मरूंगा लौट जाओ।'

'नहीं! मैं तुम्हारे साथ ।'

'बच्चे कहां हैं?'

'घर।'

'किसके पास?'

'अकेल।

दो बूद आसू उसके गालो पर ढुलक आये।

'नीरू घर चला।'

रास्ते भर सोचता रहा य मछली कौन थी।

——

सागर और सीपिया

वह चिर प्रतीक्षित शाम फिर किसी अज्ञात प्रेरणा के –ब धन वश मेर कुठित मनका लहरा के सग खेलन का जस मधुर निमत्रणद रही थी। अपने आप से अनभिज्ञ मेरा अस्तित्व पुन एक लम्ब अन्तराल के बाद सरस सितार पर मधुर रागिनी छेड देन का माना आतुर हा उठा था। नीलाम्बर का अपलक निहारत हुए मर दो नयन दीप अपन प्यार की मधुरतम प्रेरणा शक्ति के सान्निध्य मे कही बहुत ही दूर काल्पनिक— परिवेश की सीमाओ को लाघत हुए न जान कौन से स्वरो को पूरा करने की इच्छा लिये थे। अवगु ठन से झाकती हुयी रजु की लजीली चितवन।

'रजु ?'

'जी!' चूडिया की मधुर खनखनाहट क सग उसके नाजुक हाठा की मादक मुस्कान फिर मेर राम राम म समा गयी थी—माना युगा युगो से बिछुडी दा- अ तद्व द्व भरी आत्माए, धरा पर किसी कला का सवारने पुन आकाश गगा स उतर आयी हो।

मैंन दखा प्यार और दद भरे स्वर म रजु कुछ कहना चाहकर भी कह नही पा रही हमेशा की तरह उसके दद की गहरायी मैं नही नाप सका।

राजेश! देखा सागर की असख्य लहरें बार बार पावो से टकराती हैं। तुम्हारी कला साधना की तरह हमेशा मुझ अपन पास बुलाया करती हैं। मैं डूब जाती हू राजेश इन्ही लहरा मे फिर कुछ दिखायी नही दता नजर आती हैं तो केवल सीपिया ना सागर और ना जल।

'रजु मैं जानता हूं। तुम्हारे प्यार और मवेदनाओं को शब्दों की कड़िया म नही बाघ सकता। मैं तो बधा हू ही कर्तव्य म। जानती हो म कि इस मधुरतम आकर्षण से विवश मस्कारो की मर्यादा भी भूल रहा हू। तुमस तो कही ज्यादा मैं जकड़ा हुआ हू । और वो वो राधा अपने नेह का दीप जलाकर निन रात मेरी पूजा करती है लेकिन तुम्हारे प्यार के आलोक को भी बहुत कुछ अर्पित करना चाहता हू । अधिक क्या कहू ?'

शाम का धु धलका बढ चला था। मैंने—प्यार और वेदना की प्रतिमूर्ति अपनी रजु को, बाहो में भर लिया था। मुझे लगा फिर कहीं मैं भटक गया था ।

रजु की आखो मे आंसुओ की लड़ियाँ टूट–टूट कर बिखरने लगीं –।

'नही रजु ! ऐसा नही करते पगली ! आज से—पहले तो तुम इतनी अधीर कभी नहीं हुयी–।

बधन और दृढ हो गया था।

'नही राजेन्द्र ! अब तुम्हे मैं जाने नहीं दूगी।

मेरी करुणा का स्रोत बह निकला। सिसकियो का तूफान उमड पडता कि राधा न झिझोडकर जगा दिया ।

'चाय ! दिन गये तक सोते रहने का इरादा है क्या ?'

राधा मेरे बहुत करीब आ गयी थी और मैं ।

लोहा-लक्कड

ये डेढ सौ रुपये !

रुपये देकर नीता चुप हो गयी । रुपयो को पाकर मां की बुझी आंखे मानो 'जहान' देखने लगी । वह खुशी से चिल्ला पडी -अरे गुड्डू ! सुन रे… ले अपनी फीस के पैसे अभी से बस्ते मे डाल रख । सुनता ही नहीं, न जाने कहाँ चला जाता है ओह ?

'नीता ! मेरी ऐनक मिली कि नही ? और दवाई ?'

'कल मिल जायेगी पिताजी !' नीता ने धीरे से कहा, 'जी आज तो वक्त नही मिला ।

वो लाठी टेकते कमरे म चले गये ।

माँ बडबडाती रही थी कित्ते रोज के बाद पैसो की शक्ल देखी है ! 'अरी ओ कान्ता !' कहाँ मर गयी रे ? आग लगे तेरी जवानी को घर मे टिक्ती ही नही ।

अम्मा इत्ते सारे पैसे !' एक स्तब्ध सी दृष्टि नीता पर डालकर कान्ता रुपय लेकर चली गयी । माँ होठो ही मे हँस पडी थी ।

खम्बे के सहारे खडी नीता की आँखे पथरान लगी ।

'हू ऽ इत्ते सारे पैसे ऐनक दवा फीस राशन । किसी ने पूछा तक नहीं पैसे—आय कहाँ से कैसे आय ?'

उसका अग-अग दुख रहा था । नही ई मिस्टर माथुर मैं कल नही आ सकूगी ।'

'नही उई ऽ!' दबी सी चीख का और दबाकर वह 'बाथरूम' की ओर बढ गयी ।

— —

एक अदद औरत

वो एक सीता थी।

एक यह भी सीता है।

और भी सीता होगी ही।

चन्द शब्दों का मात्र एक पर्याय कि समय समय पर नाम और परिस्थितियां बदलते रहने के बावजूद भी औरत को शाश्वत प्रतीक्षा-सन्देह का ही परिवेश मिलता है। कुछ भी नाम विशेषण होने के बावजूद --वो एक अदद 'औरत' ही रहेगी।

स्थायित्व

मिलन—री वेदना ! तुझ देखकर कई बार मन पसीज जाता है कि आंसू और आह ही तेरी सम्पत्ति ह । क्या तुझे अपनी किस्मत पर अफ-सोस नहीं होता ?

वेदना—नही तो । अपनी इस छटपटाहट के बाद तुमसे साक्षात्कार होता है, तो लगता है शेष कुछ भी नही बचा। बता, पूर्व स्थिति का आन्तरिक सुख तूने कभी भोगा ?

भूख

नोकरानी के छाट गुड्डू के साथ सेठानी का पाता मनहर बागीचे की सुन्दरता देखने मे निमग्न सा था।

'गुड्डू रे ! देख तो माँ कहती है, यही होते हैं चम्पा क फूल सुन्दर खुश्बू वाले। अरे ओ ! कहाँ ध्यान है तुम्हारा ?' मनहरन गुड्डू को झिझोडा। उसकी आँखो म आय आसुओं न मनहर का हिला दिया। "भैया ये देखा भवरा न जान कब स भूखा है। पता नही बचारा कब से फूल के साथ चिपका पडा है।

पर्दे के पीछे

इन्क़लाब !

जिन्दाबाद।

मजदूर एकता।

अमर रहे।

पूंजीवाद का नाश हो।

झंडे लिये, छः लीडरों के पीछे एक भारी भरकम जुलूस था।

कपिल, सबसे पीछे— मौन धीरे धीरे चलता हुआ बुदबुदाया हूँ ऽ स्साले कुत्ते हरामजादे! बखूबी जानते है कि मालिक की कोठी की भीतरी दीवारें नोटों की गड्डियों से मजदूर लीडरों के मुँह अभी बन्द करने वाली हैं।

जुलूस गेट तक पहुँचा। लीडर 'समझौते' के लिए अन्दर चले गये। कपिल जानता है वे लौटेंगे तो उनकी जुबान में ताले होंगे और कारखाने का द्वार खुला होगा।

इन्सान

एक दिन वो नगर के कई लोगो से मिला।
सबने अपने अपने नाम बताकर परिचय दिया।
लेकिन उसे बेहद कोफ्त हुयी।
'कि काश ! कोई तो कह देता यार !'
-मैं क्या हू ? -कौन हू ? क्यो पूछते हो ?
हू तो सिफ इन्सान ही।

निरुत्तर

अफसर ने क्लर्क को डांट पिला दी। रोज रोज की तुम्हारी ऊल-जुलूल हरकतें आफिस का माहौल बिगाड़ती है तुम्हे शर्म आनी चाहिए। पता नहीं तुम आदमी हो या

अफसर की बात पूरी होते न होते क्लर्क बीच मे बोल उठा

'सर! माफ करना आदमी की बात मत कहो। इस देश मे अब आदमी और आदमियत कहा है! क्या आप रोज अखबार नही पढ़ते ?'

धरती की धूल

नम्रता बेहद संवेदनशील लड़की है। प्रकृति के सहारे जीते रहने और फलीभूत होने की आकांक्षा लिये। स्वप्न बुनने की विवशता लिये। अन्दर ही अन्दर वह अपनी कुण्ठा का शिकार बनती चली गयी—बरसों बीत गये। बहुत कुछ कर पाने की इच्छा मात्र संवेदनाओं की सकरी गली में दम तोड़ कर खत्म हो गयी।

'विपत्ति के असहाय क्षणों में जीवन से निराश—हारे हुए मत भूलो कि धरती की धूल ही आकाश का बवंडर बनती है।'

ये उक्ति अचानक उसके मस्तिष्क की दीवारों को मथ गयी। उसकी आखों में आँसू नहीं अब कर्तव्य की निष्ठा है।

—

अन्तिम चित्र

वह एक विचारक था। रेखाचित्र बनाने और उनमें रंग भरने में माहिर। ऐसे चित्र बनाता कि देखने वालों को मार्मिकता के रहस्य समझ में आ जाते।

एक दिन वह बेहद उदास था। कहीं का भी वातावरण उसे रास नहीं आया। शहर से दूर खंडहरों के बीच आ गया वह।

तेजी से उसके हाथ कागज पर उतरने लगे। देखते ही देखते एक चित्र उभर आया।

वह चौंका हू बहू उसका अपना जीवन चित्र! सिहर उठा वह!

'क्या यही मेरा जीवन है?' उसका धैर्य एक विडम्बना बन गया।

यही उसका अन्तिम चित्र था।

अपने लोग

बौखलाया हुआ सा वो हर वक्त इसी बड़ी इमारत में आगे चक्कर काटता रहता है—बेबस सा। आज उसे दौरा पड़ गया। इकट्ठी हुई भीड़ में से एक हमदर्द आगे बढ़कर उसे उठा रहा है। उफ़! लगता है बेचारे का शायद अपना कोई नहीं है।

कई हाथ उसकी मदद को आ रहे है। लेकिन इमारत में अन्दर रहने वाले लोग—उसकी शक्ल देखकर, अन्दर चले गये। यही चारों उसके सगे भाई हैं जिन्होंने इस युवक को कुछ अरसा पहले पागल क़रार कर घर से निकाल दिया था? यही इसके अपने हैं।

——

सघर्ष और शोपण

सघव ओर शापण म एक दिन मतभेद हो गया।

'तू मुझ पर हावी हो रहा है? तेरा सवनाश हागा। जानता है महामानवो न मेरी कितनी महिमा बखानी है? सघप न कहा।

अरे जा ! तू अव्वल दर्जे का मूख जड ! तुझे ता मैं खत्म ही कर दूगा। जिस भाति मैं फल फूल रहा हू क्या तू मरी उन्नति नही देख सकता! ले जा अपनी सूरत मर सामन स तेरा युग समाप्त हो गया है। शापण ने तैश मे आकर सघप का गला दबाच दिया।

सघप की आखो के आगे शोपण का बल मडरान लगा। हर व्यवस्था हर कुर्सी हर पदवी हर व्यक्ति पर उस शापण प्रवत्ति हावी नजर आयी और उसके 'कर्ता अभ्यस्त हसी म डूब हुए।

विदआउट एक्सपीरियन्स

पिछले सात वर्षों से वो हर कम्पनी मे हर छोटी-बडी इन्टरव्यू देने जाता मगर एक ही सवाल उसे निरूत्तर बना वापिस लौटा देता रहा।

आज सीनियर पोस्ट के लिए वो इन्टरव्यू बठक के समक्ष पहले जसी भीरूता और डर से नहीं वीरतापूर्ण मुस्कान सहेज, अपना नाम पुकारे जाने पर पहुचा।

फिर उसी सवाल से उसका सामना हुआ हैव यू एनी प्रीवियस एक्सपीरियन्स ?'

वो तपाक से बोला—जी जब कहीं नौकरी ही ना मिले कसा एक्स पीरियन्स ? नो चान्स वो अकेले बिल्टी नो कैरियर नो एक्स-पीरियन्स !

इस बार उसे चुन लिया गया।

नियति

अरे रे तू ?
हूं-अ---क्यों ?
तेरा ये हाल ?
यही तुझ से पूछू तो ?

—.—

वर्थ डे

मनु और राजू दोनों पक्के दोस्त है।

आज राजू खुश है। छब्बीस अगस्त जो है उसका जन्म दिन। सारा घर खुशियों से चमचमा रहा है। राजू मेहमानों की भीड़ में भी अकेला मनु की प्रतीक्षा में बेताब है। सोच रहा है कि आज साल तो मनु उसके जन्म दिन की तैयारी खुद ही कर डालता था पर आज ? राजू एकाएक बौखला उठा। हूं हूं नहीं आता ना आये। इन गरीबों को सिर पर चढ़ाना ही गलत है। भला अमीर और गरीब का मेल भी क्या ? स्साला है भी तो पूरा फटीचर !

उधर मनु का मन रो रहा है कि दोस्त को आज के दिन तोहफा दे भी क्या ? जबकि घर में आज अन्न का दाना तक नहीं है।

———।

दायरा

'बरखुरदार ! तुम्हारी रचनाएं मैंने पढ डाली है। हो तो तुम ए होनहार लखक पर'तु !

'पर'तु क्या ? भार्गव साहब कहिये ? कुछ कमी है मेरे दृष्टि कोण मे ?'

'हा कमलकिशोर ! तुम्हे अपनी वैचारिकता का धरातल औ ज्यादा पुख्ता बनाना होगा। सफलता इसी बेस पर निश्चित होती है। तुम्हारी सोच का दायरा अभी , भार्गव साहब हँसने लगे।

'तुम खामोश क्या हो ?'

'जी नही ! दरअसल मेरा दायरा मजबूरियों से भरा है। जो भोगता हू सहता हू और झेलता हू सिवा इसके और सूझता ही नही।'

भार्गव साहब पल भर को कमलकिशोर के दायरे म अटक गये जो वास्तव मे अन्दरूनी तौर पर उनका भी है ही।

आस्तीन के साप

बीस साल के बवफे के बाद आज दोना भाई मिले। दोना की आखो मे आमू थे।

बडे न कहा—किशनलाल ! तू सचमुच ही बडा भाग्वान है। बहद खुशी हुयी य जानकर कि तू पाँच पुत्रा का पिता है। ईश्वर का ऐसा न्याय मुझ पर ता हुआ ही नही। स्वर बच्चा के नाम ता बता।'

किशनलाल गुस्म से उछल पडा।

क्यू भाई ! ऐसा क्या ? मैंने तो बच्चा के नाम ही पूछने ।'

किशनलाल आक्रोश से भरा था ! नाम ?

आस्तीन के साऽ प ! स्साले हरामी ! सबके सब कोई जुआरी कोई शराबी कोई चो ऽ र।

बात पूरी हात होत दानो भाई फिर से रान लगे।

ओवरटाइम

'मा ! हो सकता है मेरा ओवरटाइम लग जाये।'

माँ जानती है कि अक्सर शनिवार को मधु देर गये तक ही लौट पाती है।

शायद मधु कुछ और कहना चाह रही थी लेकिन मा बरामदे मे आ बैठी क्योंकि घटी की सडिला की खटखट उससे सुनी नही जाती वो सुनना नहीं चाहती। बिल्ली को देख कबूतर की बद हाती आखो की तरह उसकी दशा हो आयी। चन्द—पलकों मे जागते ओवरटाइम के दृश्य मिस्टर वरमानी, अशोक शुक्ला मधु। नगा यथार्थ कड़वा घूट बनकर उसके मुह का स्वाद कसैला कर डालते है। बखूबी जानती है वो, - लेकिन रहस्य उद्घाटित नही करना चाहती। प्रमिला ललित और उमा की पढायी के बढते खर्चे जिन्दगी की जरूरते उसका हलक बन्द किये हैं।

माँ का मन आत्म ग्लानि से भर उठा है। जी चाहा स्वय पर थूक दे।

उसकी बन्द होती पलकें एकाएक खुल गयी है।

घर

य एक खूबसूरत बिल्डिंग है तमाम मविधाओ स लैस। यहाँ का हर सदस्य अपनी अपनी धुन का गीवाना। हस्बड वाईफ सर्वेट गाडी हास्टल मे पलते बच्चे ।

वो एक टूटी झुग्गी है। चौखट क इस पार हर रोज मजी नयी-नयी कल्पना। देव अचन से उठती सुगध। सन्तुष्ट पति-पत्नि स्वस्थ बच्चे।

बिल्डिग मे सुविधाए हैं सुख नही।

झुग्गी मे सुख है सुविधाए नही।

बिल्डिग घर नही झुग्गी घर है।

—

फूल और काटा

'तुम तो एकदम फूल ही हो।'

'एक काटा हो तुम राजकुमारी ! सख्त काटा।'

'अरे ऽ र विस्तीर्ण सा कटीला पथ। वेदनाओं की मरुभूमि मे आत्म-परीक्षण के मर्म भेदी क्षण। क्या कहूँ ? पिताजी तो हमेशा ही फूल लेकिन मा हरदम सख्त कॉटा कहती हैं।

उसकी निगाहें आसमान को देखने पर बाध्य हो जाती है। अश्रु धारा का बहाव रोके भी कैसे ! ओह ! धन का अभाव ही माना उसके जीवन मे खुशिया न ला पाने का जिम्मेदार ! मा कहती है पैदा होते ही मर जाती। अभागी कॉटा बनकर मेरे तो रोम रोम मे चुभती रहती है। कुलच्छिनी मरी, जन्मते ही तूने बाप को कगाल बना दिया था।

'राजकुमारी बेटे तू तो एक फूल है मेरे लिए। तू सचमुच ही एक दिन राजरानी बनेगी।'

पिताजी यू ही कहते रहेगे।

बोझिल पलके अब नही उठ सकती। एक कॉटा ही है अभागी।

घुटने मे सिर दबाए वह आसमान की ओर देख रही है। विखण्डित आस्थाओ को सहेजने की शक्ति—उसके सामने ही विसर्जित हो रही है फँसे हुए धन विहीन जहर उगलते सागर मे जिसका मूल्याकन होता है 'अर्थ' से इस आर्थिक युग मे।

———

विडबना

मातादीन की चौथी लडकी हुयी।

पूरे कुनबे मे मातम छा गया।

उसके भाई राम अधोर का पुत्र लडडू बटे खुशिया मनी।

आजक्ल तीसरा पुत्र हर ऐब का शिकार है बेरोजगारी का मारा नालायकी का सुबूत। हीन भावना से ग्रसित! दर दर की ठाक्रें खाता फिर रहा है न जाने कहा कहा!

मातादीन की चौथी पुत्री भी वकील है हर तरह से मा-बाप का सहारा।

पर विडबना कि, सस्कारा और परम्पराओ की मार से प्रभावित माता पिता हर पल उदास हैं। बेटी की काबलियत का ताक पर रख दिया है उन्हाने कि काबिल है तो क्या है तो लडकी ही।

—

मोह-माया से परे

'राम राम भैन !

'राम राम कहा चली सवरे सवेरे ?'

'वहू को भतीजा हुआ उसी क पीहर जाऊ !'

'ले परसाद सत्त नरैन के मन्दिर गयी थी।'

'धन है री हम ता इन झझट झमेला से दो घडी भी फुरसत ना मिले।'

'इस नात मैं ता भागवान हू। मेरी वहू ता लक्ष्मी है। सारा घर उसे सौप दिया है मैं तो हरि चरणा मे ही जी लगाऊ हू अब। अब हमारा टम है माह माया से परे हो जान का। क्या ?

'हा सही कही तून। पर अपन ता ।

लाखी दवी मुस्करा उठी। चलू हू ।

अभी लाखी देवी दस कदम भा चल न पायी थी कि उसन देखा घर की दहलीज पर खडी उसकी बहू साधु को भिक्षा द रही है। विद्युत गति स पाव बढाती वा झट से आ पहुची।

आय हाय री ! का न क्यी तुस्म राज्जा हरीचन्दर की वट्टी बणन कू ? खबरदार मेरे हुक्म बगैर घर का दाणा भी बहर निकाला बहू से फडक कर बोली—और एक ही सास म साधु से भिक्षा के दाना सन्तरे छीन लिए ।

राहत भरी सांस लेकर लाखी दवी न पूजा की थाली जमीन पर से उठायी और भजन गुनगुनाते हुए घर म प्रविष्ट हुयी—

माया मोह हटा दो राम।
नया पार लगा दो राम ॥

बेचारा

मास्टर चेतराम का अपनी कक्षा के सब छात्रो मे से—रामप्रकाश से बहुत ज्यादा प्यार है,—क्योकि वही इनकी अधिक इज्जत करता है बाकी लड़के तो निरे उद्दण्ड है। न जान क्यो वो सब मास्टर जी को बेचारे की मना द डाला है। अक्सर रामप्रकाश भी बेचारा कहलवाया जाता है।

मास्टर जी अपने ही विचारो की उथल पुथल मे है कि बस को झटका लगता है। गौर से देखा कि उनकी—आगे वाली सीट पर उनके ही छात्र सुधीर और नरेश बैठे है।

मास्टर जी सहम गये है कानो म उगलिया डालना चाह रहे हैं लेकिन बस का माहौल। नरेश के कहे वाक्य उनक सीने म चुभ जाते हैं।

'यार सुधीर। सुना होगा तूने भी उस स्साले चेतराम की लौंडिया की शादी है। कुछ पसे इक्टठे करके तोहफा दे आयेंगें कक्षा की तरफ से ?'

'हा ठीक है बेचारा खुश हो जायगा।'

'रियली बेचारा, है भी वो सीधा सा सुना है एकदम मिडिल क्लास की फैमिली'

'इससे भी बोला।'

'बेचारा बेचारा।' उन्हे लगा शरीफ और गरीब आदमी ही आज के माहौल मे बचारा है।

मास्टर जी सुधीर आर नरेश की नजर बचाकर एक स्टाप पहले ही उतर गये।

दो मन

'अरी ओ छिनाल रात के आठ बज गये आठ! अब मिला तुझे टैम घर घुसने का?'

'नाराज मत हो मा , मनजर की बीवी ने आज जरा ज्यादा रोक लिया। तू सोच साढे पाच के बाद सीधे छुट्टी होते ही तो उनके यहा पहूचू। काम म टेम तो लगे ही है।'

गीता रो पडी। उसके हाथ ठड के मारे काप रहे थे। ले मा , सौ रुपये रख। आज मनजर की बीबी ने तो तनखा दे दी। सुना है कल तो फक्ट्री का भी ओवरटेम बटेगा।'

'अरे बिल्लू , कहा मर गया नासपीटा? देख ना रेया छोरी ठड म ठिठुरती सी को। यहा आ और सुन, प्याली चा की ला बनवा के बहन कू।

कहानी

दादी मा ! तुम नही, आज मैं सुनाऊगी तुम्हे एक कहानी ।'

'तू कहानी सुनायगी ? री बित्तेभर की छोरी बाल ,'

एक शहजादा जगल म शिकार खेलने जाया करता था। मरे हुए पक्षियो को लाकर जिस पेड तले दबाता उस पेड पर रहने वाली नन्ही सी एक सारिका कई बार शहजादे का शिकार खेलन के लिए मना करती। गुस्से मे आकर एक रोज शहजादे ने सारिका को ही मार डाला। शहजादा अब भी हर रोज जगल म आता है पर वो शिकार नही करता ! हा बैठता उसी पेड पर है।

'हू-!'

'दादी मा, बस ! अच्छा सुन दादी मा जब सारिका जिन्दा थी तब तो शहजादे ने उसका कहना नही माना जब मर गयी तो शहजादा शिकार नही खेलता ! दादी वो अब पक्षियो को मारता क्यो नही ?'

उत्तर पाने की हैसियत से वो दादी की भीगी—आँखो को देख रही है।

— —

वज्रपात

'ओ री कमलो उठ जा री बौत हो चुका। तेरी इक्ली की तो वो मा न थी री हमारी सबन की थी। बताओ तो तीन दिन से लौंडिया ने अन का दाना तक मुह मे नही डाला।'

कमलो अध-बेहोशी की हालत मे थी।

ल री, जूस पी लें।'

'ना ऽऽ मेरी मा ऽऽऽ !' दहाड मार कर कमलो फिर गिर पडी।

भाई को गुस्सा आ गया। पत्नि स बोला , ले जा गिलास का ता! मरन दे ना पीती ता।'

'मैं कहू ना थी जो कि बेकार के मगज मत मारा। ढीठ छोरी है।'

'अरी, तू समझे क्यू ना। मगज मारी तो करनी पडेगी। स्साली बुढिया हमारे लिए ये 'बीमारी' जो छोड गयी।' भाइ फिर तुनक उठा। कमलो उठेगी नही ता फैक्ट्री कैसे जावेगी ? तीन सौ रुपल्ली की नौकरी छूटन लग री। हमेशा की नौकरी ठहरी !'

'हमेशा की ऽ ? इसका ब्याह न करोगे क्या—?' नातदार क्या कहगें ?'

'अरे हा ऽ !' कमलो के भाई का मुह खुला का खुला रह गया।

अव्यवस्था

व्यवस्था और अव्यवस्था का एक दिन देश भ्रमण की सूझी। पूरा देश घूम डाला। व्यवस्था का कई जगह पसन्द आयी लेकिन पूरी तौर पर उसका मन कही पर भी टिक न पाया। अव्यवस्था के साथ-साथ ही चलती रही।

दोनो राजधानी मे आ पहुची।

मन्त्री महादय के निवास को दखते ही अन्यवस्था का चेहरा दमकने लगा—अन्दर चली गयी। उसे न तो किसी दरबान न राका ना पहरेदार ने ही रोका।

व्यवस्था बाहर ही खडी रही—अन्यवस्था की प्रतीक्षा मे। थोडी देर बाद अन्यवस्था तनिक सी बाहर आयी। बाली 'तु जा। मुझे अपना पक्का ठिकाना मिल गया है।' तब से बराबर अन्यवस्था को मन्त्री महोदय गले से लगाये हैं। व्यवस्था बेचारी सिर पटक रही है।

जनसेवा

सेठ जानकीदास किससे अपरिचित है ? पूरे के पूरे क्षेत्र मे उनकी लाकप्रियता का आधार उनकी इन्सानियत ही तो है । उनके कठ स निकली हर बात दिव्य प्रेरणा समझी जाती है ।

सेठ साहब के लिए आज अपार जन समूह जय जयकार कर रहा था। करता भी क्यो ना ? रिश्वत खोरी धाधले बाजी भ्रष्टाचार जैसी बुराईयो को इस इलाके से जड विहीन करने का सकल्प अगर लिया तो सिफ सेठ जानकीदास ने ।

बारिश म भले ही पाडाल भीगता रहा उनके भाषण के प्रति तन्मयता बराबर बनी रही ।

अब वो कोठी मे लौट आये है । अपने प्राइवेट रूम मे स्टेना कामिनी के भरपूर गदराये यौवन से उनका साठ वर्षीय बुढापा मनचाहा खिलवाड कर रहा है ! ओह यू स्वीटी ! जस्ट गो टू दैट कानर एण्ड कम अलाग विद दट ब्लक नाइट ! अरे हा वो भागीरथ आया कि नही ?'

'नही सर !'

'हूऽऽऽ! ता एप्रोच चाहिये उसे ? परमिट भी मगर जरा सी सेवा करते मानो स्साले की मा मर जाती हो ! पूरे ढाई हजार वसूल न करू तो मेरा नाम नही ह रा म जा ऽ दे की औला द !' मारे गुस्से के सेठ साहब दात पीस रहे है ।

———

रिटायरमेंट

'चमनलाल जी ! शायद आपके भी रिटायरमेन्ट आडर बंसीलाल के आदेशों के साथ ही जारी होने वाले हैं ऐसा मुझे कल प्रशासन विभाग वाले भटनागर साहब से मालूम हुआ।' आज सुबह से ही मनोहर की इस बात ने चमन लाल के मन मस्तिष्क में उथल पुथल मचा डाली है।

'नहीं नहीं मुझे तो कल दफ्तर नहीं जाना ! अब तो एक्सटेंशन भी समाप्त हो चुका बस हिसाब किताब ही होना है। अरे भगवान ! आखिर तूने सात सौ की आमदनी बन्द कर ही डाली ! कमला और विमला की शादी भी तो अभी करनी है। हां गहनों और पी०एफ० के पैसों से इतना तो हो ही जायेगा। मकान का किराया। टीनू-बीनू के कॉलिज के खर्चे बीमे का प्रीमियम ! ओह ! ये सब कैसे होगा ?'

'अरे ओ बीनू टीनू। जाओ रे उल्लू के पट्ठो कमा कर खाओ। कल से कालेज जाना बन्द कर दो। क्या रखा है पढ़ाई लिखायी में ? यह अट्ठावन बरस का बूढ़ा कितनी खुशामदें करता रहेगा तुम्हारे लिये ? तुम भी चली जाओ राधा क्यों मेरा तमाशा देखने आयी हो ? दो घण्टे से बैठा हूं कोई पानी भी नहीं पिलाता। रिटायर जो हो गया हूं। कि, चमनलाल का माथा कुर्सी की बैंक में जा टकराता है सारा दफ्तर उसे घूमता सा जान पड़ा !' ओह ! केशव एक गिलास पानी देना यार !'

——

छुट्टी की मजूरी

'एक महीने मे तीन छुट्टिया ! मैं नही दे सकती ।', मिसेज खन्ना गुस्से मे बोली ।

'बीबी जी ! आगे से ऐसा नही होगा । मेरा आदमी और दोनो बच्चे बीमार हैं मैं तो खुद ऐसा नही चाहती ।

'बको मत आये दिन बहाने बाजी के लिए तुम्हे यही घर मिला है ?'

बीबी जी नही राम कसम ऊ नुक्कड वाले कपूर साहब के घर भी आज चार दिन बाद गयी । उन्ने तो कुच्छ नी कहा बल्कि ढेर सा फरूट और न्यिा खान कू ।' आख नचा कर रधिया बोली ।

,अजी हा, मर गये वो तुझे फरूट देते हा ऽ ।

'बीबी जी एक बात है वालना मत्ती किसी से तो कहू ?

बोल ! तीखे स्वर मे मिसेज खन्ना बोली ।

वो वा कपूर साहब है न , पिछल हफ्ते से घर नी आये । सुनने मे आया कि अपने दफ्तर की सटूनो सग आगरा गये हैं ।'

'अच्छा री रधिया, बैठ तो ।

'अरेऽऽबीबी जीऽऽरोज्जाना ई मिया बीवी मे झगडा-पट्टी रहवै थी अपने कानो सब सुणा अपने कान्नो राम कसम ।

चाय पी री रधिया बनाऊ ?'

'ना।'

(दुः) स्थिति

—कमीन ! इसी बात का लेकर तो तरे बाप का खून किया था मैंने, और आज तरी फिर य मजाल कि, कटे प नमक छिडके। दिल की घुटन को दबाने की असफल कोशिश में, पुष्पा बुदबुदा उठी ' मिटन जाग ! दिहाडी मिल ता बाछ खिल जायें सुबह का फिर नोट दीवखे ता हरामी चहक जाय सबके सब। जिस पर य मरदाना तौर ! हड्डिया तुड-वाब कोई मौज कोइ करे। मैं पूछती हू कमबख्त की औलाद ! तरी हिम्मत हुयी कसे कि लगा पूछन घर बार छाड छाड तू माइ ! जाव, कहा? बापू के मरन पीछे ता तू जादा ई फिरन लगी।

क्रोध स भडकती पुष्पा रसोइ म बडा चाकू लेने भागी

अधरा था ठाकर लगी।

'उफ ! वखत हुयी गया। मुखिया वडी वेसब्री स ।'

पुष्पा रगोली दातुन मुह म डाल निकाल पडी।

इज्जत

खजाना बडी हडबडी म एक गठरी सी लकर आगन म आयी तो बेट न पूछ लिया—कहा जा रही हो मा ?'

—कही नही—तू यहा बठ।' खजानो न गठरी छुपा लेन की कोशिश करत हुए कहा—मैं अभी आती हू ।'

—यह तुम्हार हाथ म क्या है ?'

—कुछ नही कुछ भी ता नही।' कहती खजाना चोर की तरह बाहर निकल गयी।

गठरी म खजाना की दो पुरानी सलवारें और एक साडी थी। गली मे आकर वह पडोस के मकान को दखकर बुदबुदाने लगी कम्बख्त ! पता नही अपने आप को क्या समझते हैं हम गरीब सही पर किसी से माग कर तो नही खात कटोरी लत है ता कटोरी दे भी देते हैं अपना ओढत हैं अपना पहनते है फिर भी इनकी नजर इन पर लगी रहती है मर तो नहीं गय हम अभी हिम्मत बाकी हैं ।

दोपहर को खजानो अपन लापता पति की खोज-खबर लकर निराश सी वापिस आ रही थी ता घर पहुचते सोचा कि पडोसन से थोडा आटा माग ले ताकि बेटे को तो कम से कम खिला पिला दे। परन्तु वह पडोसन की दहलीज पर ही ठिठक गयी। वो अपनी बतन माजने वाली से कह रही थी—

—खजाना के घर का जानती हो, चार दिन से अगीठी नहीं जली।'

यह सच था, मगर खजानो तिलमिला गयी थी।

वापिस आकर खजानो ने आखिर अगीठी जलाकर दहलीज पर रख

वेवशता

ो है न केले और सेव ?' बिट्टुआ मा को

ौसम म फल खान स गला बठ जाता
ास्त पैस कहा स आयेंगे ? तरा बापू

ा गया।

नगी रह गयी वतना की राख

भीड

भीड थी कि बढती ही जा रही थी।

हर कोई किसी न किसी से इतनी ज्यादा इकट्ठी होती जा रही भीड की वजह पूछ रहा था।

अचानक भीड मे से दा व्यक्ति तजी से भाग खडे हुए।

भीड आपसे आप तित्तर बित्तर हो गयी।

—

विवशता

'अम्मा री ! मेरे वास्ते लायी है न केले और सेव ?' बिटुआ मा को खुले नेत्रा से तक रहा है।

'बिटुआ रे ऐस सख्त ठडे मौसम म फल खान से गला बैठ जाता है। तू बीमार हो गया तो इलाज वास्ते पैसे कहा से आयेंगे ? तेरा बापू तो !'

'हा मा !' बिटुआ बहकावे मे आ गया।

मा ने आसू पोछते हुए, हाथो म लगी रह गयी बतनो की राख धोती के पल्ले से ही पोछ डाली।

विवशता

'अम्मा री ! मेरे वास्ते लायी है न केले और सेव ?' बिट्टुआ मा को खुले नेत्रो से तक रहा है ।

'बिट्टुआ रे ऐसे सख्त ठडे मौसम म फल खान से गला बैठ जाता है । तू बीमार हो गया तो इलाज वास्ते पैसे कहा से आयगे ? तरा बापू तो !'

'हा मा ।' बिट्टुआ वहकावे मे आ गया ।

मा ने आसू पोछते हुए, हाथो म लगी रह गयी बतनो की राख धोती के पल्ले से ही पोछ डाली ।

चश्मा

'ऐ जी ! जरा अपना चश्मा तो दियो । दूर की नजर मे तो मेरे भी यही काम आ जावे ए ।' ठेकेदार की पत्नि ने कहा ।

'चश्मा ही क्यो पूरी नजर ही ले ले ।' ठेकेदार चहक रहा है ।

'तुम्हारी नजर ? हुन्हु -जो एक ही वार मे गरीब मजदूरिना को खा जायें स्वाह कर डालें ।' न जाने क्या-क्या वो सोच रही है !

'चुप क्यो हो राजरानी ?'

'अच्छा जी—रहन दो- न चहिये चश्मा ।' ठेकेदारनी दूसरे कमरे मे चली गयी ।

ठेकेदार हस पडा बेहद भोली है बेचारी !

—

उसके बाप की मौत

गिरिराज का बाप तडके ही परलोक सिधार गया था। बेचारे का एकमात्र सहारा बाप ही तो था पर।

लाश के पास दहाडें मारता गिरिराज बसुध सा होने लगा। जब 'अडडे पर पहुंचने में वो लेट हो गया तो रास्ते लाग उसके घर ही आ पहुचे।

राघू बोला—अरे गिरिराज! रोव क्यू है रे? मेरा बाप मरा था न जब तिलभर न रोन दिया था किसी ने! मरने—वाले के साथ भी कोई मरता है यार? उठठ दे उठठ। भीखू से बोला—अब तू ही समझा इसे रो रो कर मरा जावे है!

भीखू ने कहा—सुन बे आ पटठ! बाप ही तो मरा, कौन जहान मर गया? हम काहे कू हैं? मैं तो खुद घडियां गिनू हू कब वो अपना बुडढा मरे और अपने फरी हो जम्म के बाजी लगें फिर और एक तू है कि धाय धाया लगा रखी है। ले—वो बन्तासिह भी आ पहुचा।

लकिन गिरिराज लाश पर फिर से बिफरने लगा। दहलीज पर से ही बन्तासिह बोला—आय की हाया इ आय? शुकर कर चमेली नूं ल्य—सक्केगा एत्थे। ऐसे बुडढे न तो तेरी जान ई खादी होई सी। ओ छडड यार माया बडा प्यो नू याद करन वाला।

गिरिराज को लगा शायद सभी ठीक कहते है। इशारे से बन्तासिह को बाहर बुलाया—कहा भूख लगी है।

'ले' आयी अक्ल बेटा?

भीखू भी बाहर आ गया। अब चारा दोस्त रगनाथ हलवाइ की दुकान पर जलबी खाने म मस्त हं।

मजदूर

'मजदूर भारत जसे कृषि प्रधान देश का आशामय वतमान है, जिसके परिश्रम से देश का भविष्य स्वर्णिम होगा—सिद्ध करो। टीचर ने कक्षा मे छात्रा से कहा।

सियाराम उठ खडा हुआ।

'सर! हमारे मुहल्ले म किसी दिन आकर देखिय अपनी परिभाषा का उल्टा रूप! हर झोपडी—दरिद्रालय मरते बच्चे लापरवाह ठेकेदार।'

सियाराम की आखो मे चमक थी और चेहरा बुझा हुआ।

वो एक जजदूर का बटा है।

चुंगी टैक्स

चुंगी पर इंसपेक्टर के पास फैक्ट्री का एक अफसर आज सातवीं दफा आया तो खीझ से भरा था लेकिन नम्रता की आड़ में वो फिर पूछने लगा—

'इंसपेक्टर साहब! माल के लदे तमाम ट्रक कब तक रवाना कर दिये जायेंगे? आपके पास चक्कर लगाते लगाते परेशान हो गया हूं।' और उसने पूर्व की भांति नाटों का नजराना फिर से भेंट किया।

चुंगी इंसपेक्टर जोर से हंसा।

अफ़सर कुछ नहीं समझा।

इंसपेक्टर हँसते हँसते बोला—गिरीश साहब! नये अफसर हो न! घर आना। मैनेजर साहब से जाकर इतना कह दो।'

दूसरे दिन नकदी तथा किसी 'और' की भेंट इंसपेक्टर के घर पहुंची।

दोपहर बाद चुंगी पर से तमाम मेटीरियल रवाना हो चुका था।

आम आदमी

अध्यापक सफेद सी पोशाकें। आखो पर चश्म। अधिकाश की यही वेशभूषा थी। इस साधारण से इलाके म—आम आदमी की विचार-धारा का प्रतिनिधित्व करता, पहला लेखकीय सम्मेलन। मुद्दा यही कि, साहित्य सरचना मे आम-आदमी को विशेष स्थान मिलना ही चाहिये। सम्मेलन को सुनन, उस इलाके के कुछ चुनिन्दा लोग भी आये हुए थे। किसी एक लेखक के वक्तव्य वीच एक श्रोता बाल उठे—

'लेखक भाई साहव! शोषण, गरीवी, असमानता तथा—अत्याचार का शिकार हो ता हम जैसा काई आम आदमी होता हागा न? लकिन तीन चार भाषण वक्ताओ के—अनुसार तो आम आदमी, लगा, कि, यह बडी प्यारी चीज है! सडक और साहित्य के आम-आदमी म फक क्यो है भाई साहव?'

कई आवाजें इसके पक्ष म उभरी। शिविर मे खलबली मच गयी— यहा ता आम आदमी को सचमुच चलज किया जा रहा है!

ऽ ऽ ऽ आम आदमी पर वहस ही गलत थी कहा सडक कहा साहित्य!

श्राताओ के असन्तोप का आम तरीके स शात किया गया।

एक अरसा वीत चुका है। आम जनता अपनी समस्याओ के निदान की प्रतीक्षा म है लेकिन तवस अव तक कोई सम्मेलन नही हुआ।

—

चुनावो की सरगर्मी। भागम भाग स थककर नताजी बेहद शिथिल हो गये। और तो और अपनी हार के पूरे-पूरे आसारो से घबराये कि हार्ट फेल हो गया मर गये। पहुचे यमराज के पास।

चित्रगुप्त, आ चित्रगुप्त ऽ ऽ यमराज ने दा आवाजें—लगायी पर चित्रगुप्त का दूर-दूर तक पता नही था। नेताजी चित्रगुप्त की इस लापरवाही और विलम्ब से कुछ क्रोधित होने की मुद्रा बनाये बोल उठे—महाराज, मैं कुछ कहना चाहता हू।

यमराज काई उत्तर देते इसस पूव ही चित्रगुप्त बही खाता लिय आ पहुचा। मन ही मन नताजी ने उसे कामा स्साला, ऐन वक्त आ टपका।'

'खाता खाला ऽ ऽ। यमराज गुर्राये।

'जी ई महाराज, बही के मुताबिक इस प्राणी न सिफ—इतना पुण्य किया कि एक बार इसकी पालतू बिल्ली गीता का जूठा किया हुआ ढाई किला पौन तीन सौ ग्राम दूध किसी कुत्ते को पिलाया गया था। मैं इसकी बही लेकर आता हू '

वक्त की नब्ज पहचान ननाजी ने कहना शुरू किया दुर्भाग्य ऽ ऽ! ये भी कोई व्यवस्था है? कि काई प्राणी निणय के लिए प्रतीक्षा करता रहे। महाराज, आपके निजी सचिव की इतनी गुस्ताखी कि रिकाट ही न मिले! तमाम डाक्यूमे‍ट्स आप अपन कब्जे म क्यो नहीं रखत? ये क्लक सेक्रटरी ही सारी व्यवस्था चौपट किय है! कत्तव्य की इन्हे काई परवाह नही! फिर समाजवाद कमा? गाधी जी न कहा था अधिकार

की कीमत कतव्य है। आज समय' की माग है कत य का समझना समाजवादी नीतियो को लाना।

यमराज नेताजी के वक्तव्य से बहुद प्रभावित हुए। उ हू लगा कि चित्रगुप्त द्वारा उनकी इन्सल्ट हुई है। तभी दौडते हुए चित्रगुप्त आ पहुचे महाराज ये धूत्त तो '।

चुप रहो इ ह धूत्त बतात हो।' इतना विनयशील प्राणी तो यहा आज तक नही आया। स्वग के द्वार खाल दो इनके लिए तुम दूर हो जाओ मेरी नजरा से।'

हतप्रभ चित्रगुप्त नेताजी का देखत रह गये। नताजी व्यग्य भरी मुस्कान से म द म द मुस्करा रहे थे।

— —

त्यौहार

मा आज क्या है ?

बुधवार ।

अऽऽहू कल क्या था ।

मगल ।

अरे नही मा फिर वही बात ! अच्छा, कल क्या होगा ?

वहस्पतिवार ।

अरे मा ! मा जाओ भी, क्यो नही कहती कि कभी त्योहार भी है । राकेश की मम्मी तो अक्सर ऐसा कहती है ।

सुबह का सपना

मंत्री जी सोकर उठे तो प्रतिदिन के विपरीत शिथिल और उदासीन थे।

'एक्सक्यूज मी, पूछ सकता हूं कि सुबह सुबह आप इतने सुस्त क्यों हैं?' सक्रेटरी बोला।

'हां ठीक से नींद नहीं आयी। लगता है मेरी कुर्सी जिस दम पर सलामत है आसार कुछ उल्टे ही नजर आ रहे हैं।'

'आखिर बात क्या है?'

मायूसी में भरपूर मंत्री जी की अटकती आवाज ने कहा, सुना है कि सुबह का सपना सच होता है। आज मैंने सपने में सत्य, अहिंसा और धर्म को साकार रूपों में देखा। न मालूम क्या होने वाला है?'

सेक्रेटरी बेहद चिंतित स्वर में बोला!

'सॉरी सर!

—

मा

ढाई साल का पिंटू हैरान कि घर म आज रौनक कैसी है ? बाल मन उलझ रहा है कि कल—घाडे पर पापा कहा गये थे ? वो चौंका। सामने पापा खडे थे। पत्नी स बाल—ये रहा— पिंटू !
पिंटू बटे तुम्हारी मम्मी।
हलो बाबा कम हियर ।
पिंटू विस्फारित सा पापा के गले से चिपट गया।
नही पा पा मेली ममी नही वो कहती ए लाजा मेले।'
वातावरण भीग उठा।

—

जवाब

तुम कौन ?

एक सवाल अपने आप से,

मेरे प्रयास मानवतावादी एव सच्चा इन्सान हू प्रगतिवादी विचार हैं !

'होपलेस नहीं चलेगा ।' अन्दर ही अन्दर एक आवाज कुलबुलायी ।

चुप्पी का माहौल पुरजोर हो चला । एक आवाज फिर उठी !

ये माहौल ये उग्रता इस बीच भी तुम्हारा ऐसा इरादा -! नही !

सोरी राग आई अॅम !

तो ?

अवसरवादी !

सवाल को जवाब मिल चुका ।

मुक्ति

जीवन की विषमताओं और विवशताओं से जूझते जूझते आखिर एक दिन उसने निरीह अवस्था में दम तोड दिया।

अंतिम समय तक भी मरने वाली की आखों से ढुलके आसू उसके गालों पर लकीरें बना गये थे।

उसकी तमाम रिश्तेदारिनें बहुत खुश हैं। एकादशी के दिन तो कोई विरला ही भागवान होता है जो ईश्वर का प्यारा हो। इसे तो सीधा स्वर्ग मिलेगा जिस पर सुहागिन।

जवाब

तुम कौन ?

एक सवाल अपने आप से,

मेरे प्रयाम मानवतावादी एक सच्चा इन्सान हूं प्रगतिवादी विचार हैं।

'होपलेस नहीं चलगा।' अन्दर ही अन्दर एक आवाज कुलबुलायी।

चुप्पी का माहौल पुरजोर हो चला। एक आवाज फिर उठी !

ये माहौल ये उग्रता इस बीच भी तुम्हारा ऐसा इरादा...! नही।

सोरी राग आई अैम !

तो ?

अवसरवादी !

सवाल को जवाब मिल चुका।

—

दोस्त

'यार ! तू भी कमान का आदमी है । कभी तो जी भर हँस लिया कर । दिनो दिन तुझे होता क्या जा रहा है ।' उसन उसे झिझोटा ।

'हूं ऊं ठीक । तू भी तो कमाल का आदमी है न ? कभी दोस्ती के नाम पर पूछा कि तुम उदास क्या हो ? मैं पूछता हू तुझे क्या होता जा रहा है ?'

—

विकल्प

'महेश ! तेरे पापा तो तीन सौ रुपय ही कमाते हैं न। फिर इतने बडे परिवार का गुजारा कसे चलाते है आप लोग ?'

हा भाई मजबूरी है। कज लेते रहते हैं। कभी चुका देते है कभी बढता रहता है बस यूही समझा। लेकिन तेर फादर भी तो साधारण-सी पोस्ट पर ही है। तुम्हारा घर तो बेहद सजा सवरा रहता है। तेरी मम्मी तो साडिया भी कितनी अच्छी-अच्छी पहनती हैं।'

'हा ! वा! मेरे पापा रिश्वत लेते रहते है। कईया मत किसी से।'

—•—

दोस्त

'यार! तू भी कमाल का आदमी है। कभी तो जी भर हँस लिया कर। दिनों दिन तुझे होता क्या जा रहा है!' उसने उसे झिंझोड़ा।

'हूँ, ठीक। तू भी तो कमाल का आदमी है न? कभी दोस्ती के नाम पर पूछा कि तुम उदास क्यों हो? मैं पूछता हूँ तुझे क्या होता जा रहा है?'

ऐसा क्यो ?

ग्यारह वर्ष का रोहित पिता को अखबार के भाव-पृष्ठ पर ही दृष्टि गड़ाये काफी देर हो चुकने के बाद आखिर बोला—

'पिताजी ! सुनने मे आ रहा है कि मुल्क के अन्दरूनी हालात खराब हैं खून खराबे के आसार भी हैं। आप खबरें क्यो नही पढते तो ? बस चीजो के दाम ही देखते रहते हो।'

बिजनेस माइंडिड पिता चौंक उठा।

बडी बहन

दोना पडौसिने अक्सर किसी न किसी बात पर झगडती रहती। आज सुबह एक के बेट न दूसरी की बेटी को मारा स्कूल म छीना झपटी हुयी। फिर क्या था झगडा शुरू। लडायी की समाप्ति की काई सीमा नजर नहीं आ रही थी। बगल की ताई न झगडा निबटान की गर्ज से एक को कहा—

'री शाती! तुम निमला स, इन बालका की मामूली—बातो पर, इत्ता क्या झीकती हो?'

फिर दूसरी स बाली—क्या री निम्मा? बात का बढावा देना कहा से सीखा!' कभी किसी और का भी झगडा सुना मुहल्ले म? बता! आज के बाद तुम दोनो की ऊची आवाज न आए समझी? तुम—बहनो की तरह रहा -एक बडी दूजी छोटी।

शाती बाली—हा भाई ठीक है निमला बडी—मै छाटी।

काहे री? मैं कहा स इत्ती बडी हो गयी।'

छोटी हू छोटी! निमला तुनक पडी।

'ना रे निम्मो' तू बडी।

'तू बडी मैं क्यो?'

बडी कौन हो विवाद जारी है।

—

सस्कार

राजू ! मेरी मा हर रोज कहती है जा, ताऊजी के राजू सग खेल—तेरा भैया है वा। क्या मैं तरा भैया हू !' आनू न राजू स आज पूछ ही लिया।

।'

बोल तू चुप क्या है !'

क्या बोलू ?

'भाई है तो हम साथ साथ क्या नही रहते ? साथ साथ क्यो नहीं खेलते ! तू बस मे क्या जाता है ! मैं तो पैदल ही ।'

सुन इसलिए कि तरा बापू गरीब है मरे डैडी मिल ओनर !'

तुझे कैसे मालूम हुआ !'

मेरी ममा कहती है। अच्छा जा भाग। मेरी मम्मी तर साथ देख लेंगी ता मारेंगी मुझ।'

—

सलीब

'माँ सलीब किसे कहते हैं ?
बेटा पिताजी से पूछ मैं क्या जानूं ।'
'बाबा सलीब क्या होता है ।'
।

'चुप क्यों हो बाबा बोलो न ।'
'सलीब एक रिटायर्ड बाप की भरी पूरी गृहस्थी ।
रमानाथ बुदबुदा उठे ।
माधु अवाक् है ।

—

पश्चाताप

उसके चारों ओर एक ववडर उठता रहता था।

साम्प्रदायिकता की भावना मानों उसम कूट-कूट कर किसी ने भर दी हो। उसकी मा सोचती, समय रहते शायद ये अपनी आदतों से बाज आ जाये।

वो कहती, 'बेटा ! उसूलों के लिए कुर्बानी देनी पडती है। तेरी तरह तो नही कि आये दिन बहकावों मे आकर किसी न किसी की जान लेने पर मा रो उठती, बेटा ! तू ता अपना गिरोह ये जालसाजी देश द्रोही विचार-त्याग ही दे।'

कई बार वो सोचता भी कि देखा, सारे भारत की बाग डोर सभालने वाली एक औरत इन्दिरा गांधी मामूली महिला नहीं बल्कि कोई देवी ही । परन्तु उसके मस्तिष्क म घुला जहर फिर असर दिखाता। अपनी 'टीम' का नेतृत्व खून खराबे की कुत्सित नीति ।

एक रात का ता जस उसका सारा नशा ही उतर चुका हो। उसने देखा यथार्थ की कटीली तार पर दमकता हुआ एक चेहरा आँखो से निकलती हुई विश्वास भरी ठडी ज्वाला नग धड ग बच्चा के पूरे भूगोल पर छायी हुई अश्रुपूरित नेत्रो वाली एक आदमकद महिला आकृति ! वो चीखा कौन ?

तुम्हारी मा ! आकृति हसी।

बेटे ! तुम जैसे नौजवान तो भारत की रक्षा करने वाले हो लेकिन तुम !

वो रो उठा। उसकी तन्द्रा भग हुयी।

अगले दिन दोपहर बाद प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी के दुखद निधन का अकुलाता समाचार पा वो विलख उठा मेरी माँ मर गयी ।

तबसे वो युवक पागल सा सड़कों पर घूम रहा है---ये कहता हुआ मेरी मा मर गयी !

परिवर्तन

वा वचपन रो ही सवका भला सोचता था। ग्डे हात हात उसकी आदतें बहुत अच्छी होती गयी। नतीजतन सब बार उसे आदमी नही देवता की सज्ञा से विभूपित किया जाता। कल सुबह अपने सदकार्यों के लिए उसे सम्मानित किया जाना है।

लेकिन आज उसकी सोच पर कुछ चढने-सा लगा। क्यो उसे देवता कहा जाता है। आदमी क्या नही? क्या आदमी भले काम नही कर सकता? सारे-के-सारे गुणा का भण्डार देवता ही क्या? आदमी क्यो नही? क्या आदमी निहत्था है?

उसन सम्मानित होने का निणय बदल लिया।

पहला सच

'तुम कौन ?'

'सच्च ।'

'तुम्म ?'

'झूठ ।'

'फिर तुम्हारा चेहरा क्यो मतप्राय सा है ?'

'तुम्हारे बार म भी यही पूछू ता ?'

'कि ! दाना ही एक साथ बाल उठे, एक ऐस दुष्चक्र के कारण जिसे
हम दोना झल रहे है भोग रह है ।'

दोना ने एक दूसरे का दखा—मन-ही मन इस 'सच्च' को पीते हुए।

दूसरा सच

और अब लीलावती भी नयी बहू को देखने आज आ ही पहुंची। देखा, कि सास तो—बलैंया लेते ही नही अघाती । उधर बहू सोच रही रही थी, हर बार जब भी उसे कोई देखने आती ऐसे मे हमेशा मा जी कहती हैं   'जा री ! तेरे ही लिए तो दिन भर लगे रहकर मैंने मावे के लड्डू बनाये   भागवान चख के तो देख।' और वहू—सचमुच ही मावे मे से दो लड्डू तश्तरी मे धर कर बरामदे में खाने जा बैठी । तभी पोतो के हाथो—बुलावा आ गया लीलावती उठकर चली गयी।

सासू जी भड़क उठी— तेरी मा ने जरा भी दुनियादारी ना समझायी री मुंह उठा के यू ही चली आयी। सबके सामने खाने को काहे आ बैठी ? जो मैंने तुसे कही वो सच्च थोड़े ही था।

——

तीसरा सच

ज माप्टमी के दिन भगवान का हिंडोला झुलाने वाली लम्बी कतार म एक बुढिया लगातार बोले जा रही थी—मुझ पापन को दशन दो करतार मुझ पापन के पालनहार।'

बुढिया मेरे आगे ही अडी रही ना आगे होती ना पीछे। मैंने खीझकर कहा—'ओ पापन हट्ट मुझे तो आगे बढने दे।'

'बुढिया बुरी तरह उबल पडी ओ नासपीटी। मैंने कौन-सा पाप किया है? कब दखा तून?'

मैंने कहा—तुम ही तो खुद ऐसा कह रही हो।'

" मूख मन्दिर म आकर तो ऐसा ही कहा जाय। य सब कुछ 'सच्च थोड ही होता है।

दृष्टिकोण

नौकरी पाने के सघर्ष अभियान से अन्तत बौखलाये हुए बडे भैया को पिताजी सभालते रहते—बेटा ! साहस और लगन बेकार नही जाते—योग्यता पर भरोसा रखो। मेरी मेहनत की कमाई बेकार नही जा सकती। लेकिन बडे भैया को नौकरी नहीं मिली-पिताजी ने जनरल मर्चेन्ट की दुकान खुलवा दी !

छोटे भैया भी कम पढे लिखे न थे बी एस सी फिजिक्स आनर्स। हर इन्टरव्यू मे जाते वक्त उन्हे पिताजी का यही आशीर्वाद याद रहता • किस्मत बडी बलवान है बेटे इसी पर यकीन करना। साहस और लगन इसके आगे पीछे हैं बेटे । 'परन्तु नौकरी न मिल सकने पर छोटे भैया भी शहर छोडकर गाव चले आये ।

मेरी बारी आने तक पिताजी थक चुके थे। किसी की एप्रोच से मिला नौकरी का आफ़र खोना नही चाहते थे ! इन्टरव्यू मे जाते वक्त बोले—बेटा, न वक्त न साहस न लगन न न दोस्त किसी का एतबार नही।

'रुपयो का लिफाफ़ा थमाते हुए बोले— ये वर्मा जी के लिए ।'

पहले ही चांस में मैं एप्वाइंटमेंट लेटर लिए घर पहुचा।

उपन्यास साहित्य

क्रम	उपन्यास	लेखक	मूल्य
१	युद्ध हल्दी घाटी का—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य १५ रु०
२	पिथौरा की पद्मिनी—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २५ रु०
३	आजादी का पहला सिपाही	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २० रु०
४	अभी हवा खामोश है—	भीमसिंह एजाज	मूल्य २० रु०
५	ऐसा ही होगा—	हेमन्तकुमार	मूल्य २० रु०
६	शापित सौन्दर्य—	जी० पी० शर्मा	मूल्य ३५ रु०
७	जमा हुआ दर्द—	भीमसिंह एजाज	मूल्य २५ रु०
८	अब नहीं—	सुगनचन्द मुक्तेश	मूल्य २५ रु०
९	साये अपने अपने—	राजकुमार निजात	मूल्य २५ रु०
१०	गोरी—	प्रदीप कुमार मिश्रा	मूल्य ३० रु०
११	पतित पावन—	अनन्तशरण सिंह	मूल्य ४५ रु०
१२	अहसास के खंडहर—	भीमसिंह एजाज	मूल्य २५ रु०
१३	आजादी के दीवाने—	धीरेन्द्रलाल धर	मूल्य १५ रु०
१४	एक राधा और—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य ३० रु०
१५	और खंडहर बोल उठे—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २५ रु०
१६	एक और देवदास—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २५ रु०
१७	कर्णादिकी—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २५ रु०
१८	अजुंलि भर विश्वास—	सुरेश अनोखा	मूल्य १६ रु०
१९	रास्ते अलग अलग—	प्रहलाद बन्सल	मूल्य १५ रु०
२०	पर्वत और पगडंडी—	श्रीकृष्ण मायूस	मूल्य २५ रु०
२१	परीक्षा	कल्याणसिंह	मूल्य ४५ रु०